प्रमुख धर्म

आजीवक सम्प्रदाय

- इस संप्रदाय के संस्थापक मोगलीपुतिस गोसाल थे।
- अशोक के पिता बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय को मानते थे।
  अशोक ने आजीवक संप्रदाय के भक्तों को बहुत से गुफा (नागार्जुन या बराबर पहाड़ी के गुफा, सुदामा गुफा, दशरथ गुफा) दान में दिया था।

भागवत धर्म

- इसके संस्थापक/प्रवर्तक वासुदेव (कृष्ण) थे। इस धर्म में सबसे अधिक जोर भक्ति पर दिया गया। भागवत संप्रदाय वाले बलि, कर्मकाण्ड तथा पशु हत्या के विरोध में थे।
- जैन परम्परा के अनुसार वासुदेव कृष्ण जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि के समकालिन थे।
- इस धर्म में मुख्य रूप से कृष्ण की पूजा होती है।
- इस धर्म का सबसे लोकप्रिय स्वरूप 'वैष्णव धर्म' है।
- इनका निवास स्थान मथुरा है।
- इस धर्म का उदय मौर्योत्तर काल में हुआ था। इसकी प्रारंभिक जानकारी उपनिषद में मिलती है। परंतु मेगास्थनीज द्वारा रचित इंडिका नामक पुस्तक में बताया गया है। मौर्य काल में भागवत धर्म का प्रचलन था। उन्होंने इंडिका में लिखा है कि शूर सैन यानि मथूरा के लोग हेराक्लीज (कृष्ण) के उपासक थे।
- हेराक्लीज कृष्ण का यूनानी रूपान्तरण था।
- शुंग वंश के नौवें शासक भागभ्रद के दरबार में हेलियोडोटस आया था और वह भागवत धर्म अपना लिया। हेलियोडोटस भगवान विष्णु के सम्मान में मध्य प्रदेश के विदिशा (बेसनगर) में एक स्तम्भ लेख का निर्माण कराया जिसे गरुड़स्तम्भ लेख कहा गया।
- इस स्तम्भ लेख पर उसने "ओम नमो भगवते वासुदेवाय" लिखवाया।
- इस धर्म का वर्णन सबसे पहले छन्दोग्य उपनिषद में देवकीपुत्र एवं अंगीरस के शिष्य के रूप में कृष्ण का वर्णन मिलता है।
- भगवनत धर्म के सिद्धांत श्रीमदभागवत गीता में लिखा गया है। भगवत गीता के रचयिता वेदव्यास है।
- श्रीमदभागवत गीता में मोक्ष प्राप्ति के लिए जन्म, कर्म, तथा भक्ति को समान महत्व दिया गया है। भगवतगीता की मुख्य शिक्षा निष्काय कर्मयोग (कर्म करो फल की चींता मत करों) को बताया गया है।
- कृष्ण के समर्थक को भागवत कहा जाता है।
- पंचरात्र, व्यूहवाद एवं चतुर्व्यूह सिद्धांत भागवत धर्म से संबद्ध थे।

शैव धर्म

- शिव को मानने वाले को शैव धर्म कहा जाता है और उसके उपासक को शैव कहा जाता है।
- इसमें भगवान शिव की उपासना की जाती थी। शिवलिंग तथा पहला साक्ष्य सिंधु सभ्यता में मिला है। किन्तु यह प्रमाणिक नहीं है।
- शिवलिंग को पहला प्रमाणिक साक्ष्य मत्स्य पुराण में मिलता है।
- शैव धर्म को मानने वाले दक्षिण भारत में अधिक है।
- शैव धर्म को मानने वाले लोकप्रिय वंश- पल्लव वंश, चोल वंश, राष्ट्रकूट वंश तथा चालूक्य वंश थे।
- गुप्तकाल में शैव धर्म अपने चर्मोत्कर्ष पर थे।
- शैव धर्म में परमात्मा, जिवात्मा और बंधन के परिकल्पना की गई है।
- नयनारों ने पल्लव काल में शैव धर्म का प्रचार किया था।
- शैव सिद्धांत के चार पद - विद्या, योग, कर्म और चर्चा।
- शैव सिद्धांत के तीन पदार्थ - पशु, पाश और पति।
- शुद्ध संप्रदाय के संस्थापक श्रीकांताचार्य थे।
- **शैव धर्म का प्रमाण** -
  (1) प्रारंभिक प्रमाण- हड़प्पा सस्कृति
  (2) ऋग्वेद में शिव को रूद्र (शिव) कहा गया।
  (3) अथर्ववेद में शिव को भव, शर्व, पशुपति एवं भूपति कहा गया।
  (4) मत्स्य पुराण में लिंग पूजा का पहला स्पष्ट वर्णन है।
  (5) तैतरेय अरण्यक में रूद्र की पत्नी पार्वती को (पद्मा, उमा, गौरी एवं भैरवी) कहा गया।
- मेगास्थनीज ने अपनी यात्रा वृत्तांत में डायनोसिस नाम से शिव का उल्लेख करते हुए भारत में शिव पूजा का विवरण दिया है।
- **वामन पुराण के अनुसार शैव धर्म को मुख्यतः 4 भागों में बांटते हैं-**

(i) पशुपतिक- ये शैव धर्म की सबसे प्राचीन शाखा है। इन्हें पंचार्थी भी कहते है।
- पशुपतिक संप्रदाय के संस्थापक लकूलिस थे। इसमें शिव के 18 अवतार का वर्णन मिलता है।
- लकुलिस को शिव भगवान के 18 अवतारों में से एक माना जाता है।
- पशुपत संप्रदाय का प्रमुख सैद्धांतिक ग्रंथ पशुपत सूत्र है।

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

(ii) कापालिक- ये नर खोपड़ी में भोजन तथा जल ग्रहण करते है। ये मदिरापान करते हैं।

- अस्थि के भस्म को पूरे शरीर में लगाते हैं।
- कापालिक संप्रदाय के इष्टदेव भैरव माने जाते है।
- इस संप्रदाय का मुख्य केन्द्र श्रीशैल नामक स्थान था।
  Ex. नागा साधु कापालिक होते हैं।

(iii) लिंगायत- शैव धर्म की इस शाखा का विकास कर्नाटक में अधिक हुआ।

- इसका प्रारम्भ अल्लभ प्रभु तथा उनके शिष्य वासव ने किया।
- इसमें शिव की उपासना की चलन है।
- ये शिवलिंग की पूजा करते हैं किन्तु शव को जलाते नहीं थे, बल्कि दफनाते थे।
- लिंगायत संप्रदाय दक्षिण भारत में बहुत लोकप्रिय था।
- लिंगायत संप्रदाय को जंगम/विरशिव संप्रदाय भी कहा जाता है।

(iii) कालामुख- शिव महापुराण में कालामुख संप्रदाय के मतावलंबियों को महाव्रतधर कहकर पुकारा गया है।

- महाव्रत लोग अपने शरीर पर चिता की भस्म लपेटकर रहा करते थे।
- दसवीं शताब्दी में मत्स्येन्द्र नाथ ने नाथ संप्रदाय की स्थापना की।
- इस संप्रदाय का व्यापक प्रचार-प्रसार बाबा गोरखनाथ ने किया।
- राष्ट्रकूटों ने ऐलोरा में स्थित शैवों के कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।
- प्रसिद्ध राजराजेश्वर शैव मंदिर तंजौर में स्थित है। इसे वृहत्तेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण चोल शासक राजाराज प्रथम ने करवाया था।
- शिव के महान उपासक कुषाण राजा ने सर्वप्रथम अपने राजमुद्रा पर शिव एवं नंदी का अंकन करवाया था।

वैष्णव धर्म

- भगवत धर्म से ही वैष्णव धर्म का विकास छठी शताब्दी में हुआ था।
- इसमें भगवान विष्णु का अधिक महत्व है। इसकी चर्चा पुराणों तथा उपनिषदों में मिलती है।
- इसकी उपासक को पंचरात्र कहते है।
- विष्णु का उल्लेख सर्वोच्च देवता के रूप में एतरेय ब्राह्मण में किया गया है।
- भगवान विष्णु को अपना ईस्ट देव मानने वाले उपासकों को वैष्णव के रूप में जाना जाता है।
- मत्स्य पुराण में भगवान विष्णु के 10 अवतारों की चर्चा है- (1) मत्स्य (2) कुर्म (3) वराह (4) नरसिंह (5) वामन (6) परशुराम (7) राम (8) बलराम) (9) बुद्ध (10) कल्कि है।
- परशुराम, कृष्ण तथा बौद्ध विष्णु के प्रमुख अवतार थे।
- विष्णु के अवतारों में सर्वाधिक लोकप्रिय वराह अवतार है। जिसका प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में है।
- वायु पुराण में कृष्ण सहित वृष्णि वीरों का भी उल्लेख है।

वृष्णि वीर		
1.	वासुदेव कृष्ण	देवकी के पुत्र
2.	संकर्षण	रोहिणी पुत्र
3.	प्रद्युम्न	रूक्मिणी पुत्र
4.	अनिरुद्ध	प्रद्युम्न पुत्र
5.	साम्ब	जाम्बवती पुत्र

- इस धर्म को अवतारवाद भी कहते हैं। इसे मानने वाले पूर्णत: शाकाहारी होते थे।
- वैष्णव धर्म में ईश्वर प्राप्ती का मार्ग भक्ति बताया गया है।
- भारत में वैष्णव धर्म का केन्द्र तमिल था।
- यूनान के राजदूत मेगास्थनीज ने कृष्ण के लिए हेराक्लीज शब्द का प्रयोग किया था।
- वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभू, रामानन्द, कबीर दास, रामानुजाचार्य आदि वैष्णव धर्म के प्रसिद्ध भक्त थे।
- वासुदेव कृष्ण जैन तीर्थंकर अरिष्ठनेमि के समकालीन थे।
- कृष्ण के भक्त इन्हें भगवत कहकर सम्बोधित करते थे। अत: उनके द्वारा स्थापित धर्म को भागवत धर्म कहा गया।
- वैष्णव धर्म का सर्वाधिक विकास गुप्त काल में चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में हुआ। इनके दरवार में नौ विद्वान रहते थे। जिसे नवरत्न कहा जाता था।
- स्कंदगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख की शुरूआत भगवान विष्णु के स्तूति से होती है।
- देवगढ़ के दशावतार मंदिर का निर्माण गुप्त काल में भगवान विष्णु के सम्मान किया गया।
- कालांतर में कृष्ण को विष्णु का रूप महाभारत काल में माने जाने के कारण भागवत् धर्म वैष्णव धर्म में परिवर्तित हो गया।
- गुप्तकाल में वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार जोरो पर था। यहाँ तक कि इण्डोनेशिया, मलाया, कम्बोडिया दक्षिण पूर्व एशिया और हिन्द-चीन जैसे विदेशी स्थलों पर भी इस धर्म का खूब प्रचार-प्रसार हुआ।
- वैष्णव धर्म का विकास दक्षिण भारत में बहुत तेजी से हुआ। दक्षिण भारत में इस धर्म को मानने वाले को अलवर कहा गया। दक्षिण भारत में बारह अरवल संतो को विवरण मिलता है।
- इन सब में तीरूमंगई सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं अंडाल एक मात्र महिला संत थी।

प्रमुख सम्प्रदाय, मत व उनके आचार्य		
प्रमुख सम्प्रदाय	**मत**	**आचार्य**
वैष्णव सम्प्रदाय	विशिष्टाद्वैत	रामानुज
ब्रह्म सम्प्रदाय	द्वैता	आनन्दतीर्थ
रूद्र सम्प्रदाय	शुद्धाद्वैत	वल्लभाचार्य
सनक सम्प्रदाय	द्वैताद्वैत	निम्बार्क

यहुदी धर्म

- संस्थापक- मुसा (अब्राह्म)
- हेडक्वाटर- जेरूसेलम
- एकमात्र यहुदियों का देश- इजरायल है।
- यह विश्व के प्राचीनतम धर्मों में से एक माना जाता है।
- इसे दुनिया का प्रथम एकेश्वरवादी धर्म माना जाता है।
- इस धर्म की उत्पत्ति स्थान फिलिस्तीन है।
- इसके धार्मिक स्थल को सिनेगार कहते है।
- इसे इब्राह्मी धर्म भी कहा जाता है।
- प्रमुख धार्मिक पुस्तक- तोरह/ओल्डटेस्टामेंट या मुसा संहिता

ईसाई धर्म

- प्रमुख धार्मिक ग्रंथ → बाइबिल
- प्रमुख धार्मिक पूजा स्थल → चर्च या गिरजाघर
- प्रमुख शिष्य → एड्रूस और पिटर (मछुआरा)
- जाति → बढ़ई/Carpenter
- इस धर्म के संस्थापक या जनक या पिता ईसा मसिह थे। इनका वेंथलेहम नामक गांव में हुआ था। जो जेरूसेलम में पड़ता है। इनके पिता जोसेफ तथा माता मैरी थी।
- ईसा मसिह को जीसस कहा जाता था।
- मसिहा का शाब्दिक अर्थ- परमपिता के पुत्र होता है।
- पूरे विश्व में ईसाई धर्म के मानने वाले की संख्या सबसे अधिक है। इस धर्म की उत्पत्ति फिलिस्तीन में हुई।
- इसका प्रमुख दिन रविवार होता है।
- ईसा मसिह का शिष्य सेंट टॉमस जो भारत के केरल में आकर ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार किया था।
- इसाई धर्म के धार्मिक नेता या प्रमुख को पोप या पादरी कहा जाता है।
- पोप के कार्यालय को पापेसी कहा जाता है।
- पोप का निवास स्थल रोम (इटली)में है।
- ईसा मसिह द्वारा चुने गए 12 अनुयायियों को देवदूत माना गया।
- इस धर्म की दो मुख्य शाखाएँ है- कैथोलिक और प्रोटेस्ट।
- इनके मृत्यु तथा पुनर्जन्म को इस्टर के रूप में मनाया जाता है।
- इनके जन्म दिवस को क्रिसमस के रूप में मनाया जाता है तथा मृत्यु पर Good friday मनाया जाता है।
- बाईबिल को दो भागों में बांटा गया है।
  - (i) ओल्ड टेस्टामेंट - यह यहुदी इतिहास से संबंधित है।
  - (ii) न्यू टेस्टामेंट - इसमें ईसाइयों को धर्म संबंधित विचार है।
- इनका प्रतिक चिन्ह क्रॉस है।
- इनको शूली पर चढ़ाने वाला रोमन गवर्नर पोटियस (33 ई०) था।

इस्लाम धर्म

- भारत में इसका प्रवेश अरबों द्वारा 712 ई० में हुआ जो सिंध पर आक्रमण किया था। वहां का शासक राजा दाहिर था। जो मुहम्मद बिन काशिम द्वारा आक्रमण किया गया था और उसी समय से इस धर्म का प्रचार प्रसार हुआ और मजबूती के साथ फैलता गया।
- इस्लाम अरबी भाषा का शब्द है। जिसका शाब्दिक अर्थ अल्लाह को समर्पण होता है।
- इनके धार्मिक स्थान को मस्जिद कहा जाता है।
- इस धर्म के संस्थापक/जनक या पिता पैगम्बर मुहम्मद साहब को माना जाता है।
- इनका जन्म 570 ई० में मक्का में हुआ था।
- इनके पिता का नाम अब्दुल्लाह तथा माता का नाम अमीना था।
- इनकी पत्नी का नाम खदीजा, पुत्री का नाम फातिमा था।
- इनको ज्ञान की प्राप्ति 610 ई० में हीरा नामक गुफा में हुआ था। जो मक्का में स्थित है।
- मक्का से मदीना के यात्रा को ही मुस्लिम संवत् के नाम से जाना जाता है। जो 622 ई० में प्रारंभ हुआ। इसे हिजरी संवत् भी कहते है।
- इनके द्वारा कुराण की शिक्षा का उपदेश दिया गया। जो इस धर्म की सबसे प्रमुख धार्मिक ग्रंथ है।
- इनकी मृत्यु 632 ई० में मदीना में हुई और वही इनको दफना दिया गया।
- मक्का और मदीना दोनों जगह सऊदी अरब में स्थित है।
- अली मुहम्मद साहब के दामाद थे। जो मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी थे। जिनकी हत्या 661 ई० में कर दी गई।
- अली के बेटे हासन हुसैन की हत्या करबला (ईरान) में 680 ई० कर दी गई।
- मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी को खलीफा कहा जाता था।
- खलीफा का पद 1924 तक रहा। खलीफा पद 1925 ई० में तुर्की के शासक मुस्तफा कमाल पासा द्वारा समाप्त कर दिया गया।
- मुहम्मद साहब का जीवन चरित्र इब्द ईशाक द्वारा लिखा गया।
- इनके जन्म दिवस को **ईद ए मिलाद उन तवी** के नाम से मनाया जाता है।
- इनका प्रमुख दिन शुक्रवार होता है।
- कुराण मूल रूप से अरबी भाषा में लिखा गया था।
- मुहम्मद साहब के मृत्यु के बाद इस्लाम दो भागों में बँट गया सुनी और सिया।
- सुनी मुहम्मद साहब के विश्वास पर आधारित था तथा सिया उनके दामाद अल्ली के शिक्षा पर विश्वास था।
- भारत में मुस्लिम पश्चिम दिशा में पूजा करते है। उसका कारण भारत के पश्चिम में मक्का और मदीना है।
- मक्का की ओर की दिशा को किबला कहा जाता है। जो नमाज पढ़ने के समय पश्चिम दिशा की ओर खड़े होते है।

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

☞ हिजरी संवत् के एक रूप में 354 दिन होता है और 12 महीना होता है।
☞ इस धर्म के मानने वालों को 5 अनिवार्य कर्तव्य मानना पड़ता है।

(1) बकरीद के अवसर पर बकरे की कुर्बानी देना चाहिए।
(2) प्रतिदिन पाँचों वक्त (फजर, जूहर, असर, मगरीद, ईसा) नमाज पढ़ना चाहिए।
(3) जरूरतमंदों को दान (जकात) देना चाहिए।
(4) रमजान के महीने में सूर्योदय के पहले से लेकर सूर्यास्त तक रोजा (उपवास) रखना चाहिए।
(5) हर मुसलमान को जीवन में कम-से-कम एक बार हज करना चाहिए यानी मक्का स्थित काबा की यात्रा करनी चाहिए।

पारसी धर्म

☞ पारसी धर्म के पैगम्बर जर थुस्ट्र (ईरानी) थे।
☞ इनका पवित्र धार्मिक ग्रंथ जेन्दा अवेस्ता है।
☞ इनके अनुयायी को अग्निपूजक कहा जाता है।
☞ इनके देवता को अहुर कहा जाता है।
☞ इनका धार्मिक स्थल अग्निमंदर होता है।
☞ इनपर अरबों द्वारा आक्रमण करने जबरन मजबूर करके जरथुस्ट्र को इस्लाम धर्म स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया और वहां से आदमी भागकर भारत आकर गुजरात में बस गए।
→ पारसी धर्म की उत्पत्ति ईरान में हुआ था।

One liner Question :–

★ प्राचीन भारत के विश्वोत्पत्ति विषयक धारणाओं अनुसार चार युगों के चक्र का क्रम इस प्रकार हैं। **-कृत, त्रेता, द्वापर और कलयुग**
★ आजीवक, मत्तमयूर, मयमत तथा ईशान शिवगुरु देव पद्धति में से वह जो प्राचीन भारत में शैव संप्रदाय था - **मत्तमपूर**
★ अर्धनारीश्वर मूर्ति में आधा शिव तथा आधा पार्वती प्रतीक है **- देव और उसकी शक्ति का योग**
★ 'नयनार थे' - **शैव धर्मानुयायी**
★ पोपगई, तिरुज्ञान, पूडम तथा तिरुमंगई में से वह जो अलवार संत नहीं था - **तिरुज्ञान**
★ भागवत संप्रदाय के विकास में सर्वाधिक योगदान दिया था - **गुप्त ने**
★ भागवत धर्म के प्रवर्तक थे-कृष्ण। सर्वप्रथम देवकी के पुत्र कृष्ण का वर्णन मिलता है - **छांदोग्य उपनिषद् में**
★ वासुदेव कृष्ण की पूजा सर्वप्रथम प्रारंभ की -भागवतों ने
★ वह देवता जिसे कला में हल लिए प्रदर्शित किया गया है - **बलराम**
★ भागवत संप्रदाय में भक्ति के रूपों की संख्या है **-9 (नवधा भक्ति)**
★ हेलियोडोरस का बेसनगर अभिलेख संदर्भित है - **वासुदेव से**
★ भागवत धर्म से संबंधित प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य है **- हेलियोडोरस का बेसनगर अभिलेख**
★ भागवत धर्म का ज्ञात सर्वप्रथम अभिलेखीय साक्ष्य है - **बेसनगर का गरुड़ स्तंभ**
★ 'बेसनगर अभिलेख' का हेलियोडोरस निवासी था **-तक्षशिला का**
★ विष्णु के जिस अवतार को सागर से पृथ्वी का उद्धार करते हुए अंकित किया जाता है, वह है - **वाराह**
★ वैष्णव धर्म के विषय में सर्वप्रथम जानकारी मिलती है - **उपनिषदों से**
★ प्रस्थान त्रयी में सम्मिलित हैं - **उपनिषद , ब्रह्मसूत्र एवं भगवदगीता**
★ वह प्राचीन स्थल जहां 60,000 मुनियों की सभा में संपूर्ण महाभारत कथा का वाचन किया गया था - **नैमिषारण्य**
★ रामायण का वह कांड जिसमें राम और हनुमान की पहली भेंट का वर्णन है - **किष्किन्धाकांड**
★ पुरी में रथयात्र निकाली जाती है - **भगवान जगन्नाथ के सम्मान में**
★ नासिक में कुंभ मेला लगता है- **गोदावरी नदी के तट पर**
★ इस्लाम धर्म के संस्थापक थे - **मुहम्मद साहब**
★ मुहम्मद साहब का जन्म हुआ था- **570 ई. में (मक्का)**
★ इस्लाम धर्म का पवित्र ग्रन्थ हैं **-कुरान**
★ ईसाई धर्म के संस्थापक थे - **ईसा मसीह**
★ ईसाई धर्म का प्रमुख ग्रन्थ है - **बाइबिल**
★ विभिन्न धर्मों के प्रमुख स्थल

1. जैन धर्म - **पवित्र स्थल पावापुरी**
2. हिन्दू धर्म - **वाराणसी**
3. इस्लाम धर्म - **मदीना**
4. ईसाई धर्म - **वेटिकन**

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

महाजनपद

- 6वीं शताब्दी ई.पू. अखंड भारत में द्वितीय नगरीकरण प्रारम्भ हो गई। जिसे महाजनपद कहते हैं।
- प्राचीन भारत में राज्य के प्रशासनिक इकाईयों को महाजनपद कहा जाता है।
- कुछ जनपदों का वर्णन उत्तरवैदिक काल से मिलता है।
- इसका समय अवधि 600 ई.पू. से 340 ई.पू. तक माना जाता है।
- इसका प्रमुख भाषा संस्कृत एवं प्राकृत है।
- इसका शासन व्यवस्था गणराज्य राज्यतंत्र था।
- इस समय पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार में लोहे का व्यापक प्रयोग होने से बड़े-बड़े प्रदेशिक या जनपद राज्यों के निर्माण के लिए उपयुक्त परिस्थिति बन गई।
- लोहे के हथियारों के कारण योद्धा वर्ग महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगे।
- खेती के नये औजार और उपकरणों से किसान की अपनी आवश्यकता से अधिक अनाज पैदा करने लगे। अब राजा अपने सैनिक और प्रशासनिक प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए इस अतिरिक्त अनाज को एकत्रित करवा सकते थे।
- लोगों की जो प्रवल निष्ठा अपने जन या कबीले के प्रति थी वह अब अपने जनपद या महाजनपद के प्रति हो गए।

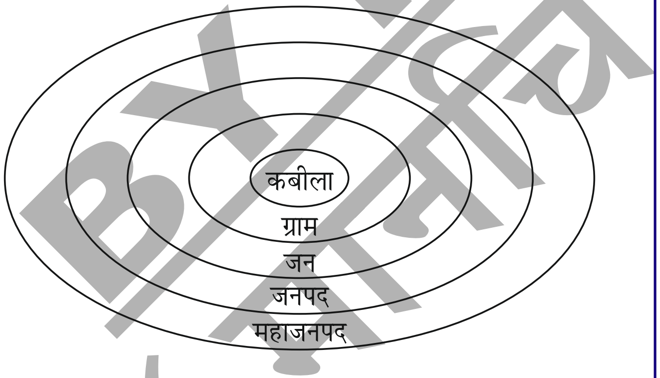

- **वर्तमान में 16 महाजनपद स्थिति–**

उत्तरप्रदेश	8 महाजनपद
बिहार	3 महाजनपद
राजस्थान	1 महाजनपद
मध्यप्रदेश	1 महाजनपद
दक्षिण भारत	1 महाजनपद
भारत के बाहर	2 महाजनपद

- **बौद्ध ग्रंथ अंगुतर निकाय तथा जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में 16 महाजनपद की चर्चा है, जो निम्नलिखित हैं–**

क्र. सं.	महाजनपद	राजधानी	महत्वपूर्ण नगर (आधुनिक नामों के अनुसार)
1.	गान्धार	तक्षशिला	रावलपिंडी व पेशावर (पाकिस्तान)
2.	कम्बोज	हाटक/राजपुर	राजौरी व हजारा क्षेत्र (उत्तर प्रदेश)
3.	मत्स्य/मच्छ	विराटनगर	जयपुर का समीपवर्ती क्षेत्र (राजस्थान)
4.	कुरु	इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)	दिल्ली, मेरठ और हरियाणा के आस-पास का क्षेत्र
5.	शूरसेन	मथुरा	मथुरा (उत्तर प्रदेश)
6.	कोशल	श्रावस्ती	फैजाबाद, गोंडा, बहराइच (उत्तर प्रदेश)
7.	पांचाल	अहिच्छत्र, काम्पिल्य	बरेली, बदायूँ, फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश)
8.	चेदि	शक्तिमती	बुंदेलखंड (उत्तर प्रदेश)
9.	वत्स या वंश	कौशाम्बी	इलाहाबाद एवं मिर्जापुर जिला (उत्तर प्रदेश)
10.	काशी	वाराणसी	वाराणसी के आसपास के क्षेत्र (उत्तर प्रदेश)
11.	मल्ल	कुशावती/कुशीनारा	देवरिया (उत्तर प्रदेश)
12.	अश्मक या अस्मक	पाटन	गोदावरी नदी का दक्षिणी क्षेत्र (दक्षिण भारत का एकमात्र जनपद)
13.	अवन्ति	उज्जैन/महिष्मति	मालवा (मध्य प्रदेश)
14.	वज्जि/वृजि	वैशाली/विदेह/मिथिला	वैशाली, मुजफ्फरपुर, दरभंगा (बिहार)
15.	अंग	चम्पा	भागलपुर, मुंगेर (बिहार)
16.	मगध	गिरिवज्र (राजगृह)	पटना, गया, नालंदा (बिहार)

- गंधार महाजनपद पाकिस्तान में था। इसकी राजधानी तक्षशिला (विश्व की प्राचीनतम विश्वविद्यालय) का केन्द्र था।
- अस्मक दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद था, जो गोदावरी नदी के तट पर था।
- उत्तरप्रदेश का मल्ल महाजनपद गणराज्य था।
- बिहार का वज्जि महाजनपद एक गणराज्य था।
- वज्जि की राजधानी वैशाली में लिच्छिवी गणराज्य का शासन था। जो पूरे विश्व का सबसे पुराना गणराज्य था। यह 8 कुलों का एक संघ था।
- सबसे शक्तिशाली महाजनपद मगध महाजनपद था। इसके दक्षिण में विंध्याचल पर्वत/पश्चिमी से सोन नदी, उत्तर में गंगा तथा पूरब में फाल्गू जैसी नदियाँ इस महाजनपद के प्राकृतिक दुर्ग का कार्य करती है।
- राजस्थान के मरूस्थलीय क्षेत्र में स्थित एक मात्र महाजनपत्र मत्स्य था।
- चंपा का प्राचीनतम नाम मालनी था।
- महात्मा बुद्ध ने अपना सर्वाधिक उपदेश कौशल की राजधानी श्र्रावस्ती में दिये।
- मल्ल की राजधानी कुशीनगर में महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ।
- महात्मा बुद्ध के समकालीन अवन्ति के शासक राजा चन्द्रप्रद्योत थे।

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

- ☛ अंग की पहली चर्चा अर्थववेद में किया गया है।
- ☛ मगध महाजनपद पर कुल 7 राजवंशों ने शासन किया।

Trick:-

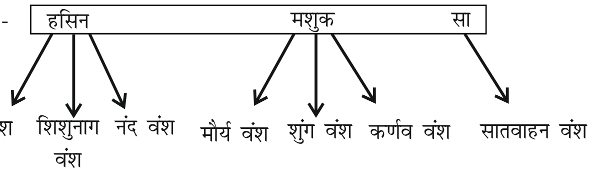

हर्यक वंश (544-412 ई.पू.)

- ☛ **संस्थापक**- बिम्बिसार (544 492 ई.पू.)
- ☛ यह जैन तथा बौद्ध दोनों धर्मों के समकालीन थे।
- ☛ इस वंश के संस्थापक बिम्बिसार थे। यह पहला ऐतिहासिक राजवंश था।
- ☛ इसकी राजधानी **राजगृह** या **गिरिव्रज** थी।
- ☛ बिम्बिसार 52 वर्षों तक मगध पर राज्य किया। यह प्रथम राजा था जिसने प्रशासनिक राज्य पर बल दिया। यह स्थायी सेना रखता था।
- ☛ बिम्बिसार बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- ☛ बिम्बिसार ने **अंग राज्य** के शासक **ब्रह्मदत्त** को हराकर अपने पुत्र अजातशत्रु का वहाँ का शासक बना दिया।
- ☛ बिम्बिसार ने विवाह के माध्यम से दहेज के रूप में लिए गए क्षेत्र से अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- ☛ बिम्बिसार की पहली पत्नी महाकोशला थी। जो कोशल राज की पुत्री और प्रसेनजीत की बहन थी। इनके साथ दहेज में काशी प्रांत मिला था। जिससे एक लाख की वार्षिक आती थी।
- ☛ बिम्बिसार की दूसरी पत्नी वैशाली (लिच्छवी) नरेश चेतक की पुत्री राजकुमारी चेल्लना थी। जिससे अजातशत्रु का जन्म हुआ था।
- ☛ बिम्बिसार की तीसरी पत्नी पंजाब के मद्र कुल की राजकुमारी छेमा थी।
- ☛ बिम्बिसार की चौथी पत्नी आम्रपाली थी। जो वैशाली की गणीका थी।
- ☛ बिम्बिसार अपनी पत्नी रानी **चेल्लेना** से प्रवाहित होकर **जैन धर्म** अपना लिया था।
- ☛ बिम्बिसार के पिता का नाम **भाट्टीया** था।
- ☛ पुराण में बिम्बिसार को **श्रेणीक** कहा जाता है।
- ☛ इसके समय अवन्ति के राजा **चन्द्र प्रद्धोत** को एक असाध्य रोग (लाइलाज बीमारी) हो गई। अत: इन्हें ठीक करने के लिए बिम्बिसार ने अपने राज **वैद्य जीवक** को भेजा। जीवक के इलाज से **चन्द्र प्रद्धोत** स्वस्थ हो गए। उन्होंने अवन्ति को मगध के अधीन कर दिया और अंग राज्य को जीतकर **मगध सम्राज्य** का विस्तार किया।
- ☛ बिम्बिसार छोटे राज्यों को युद्ध करके जीत लेता था। इसने वैशाली पर भी आक्रमण किया था, किन्तु सफल नहीं हो पाया।
- ☛ इसकी हत्या इसी के पुत्र **अजातशत्रु** ने 492 ई. पू. में कर दी।

अजातशत्रु (492-460 ई.पू.)

- ☛ इसका अर्थ होता है, शत्रुओं का नाश करने वाला। इसे कुणिक भी कहते हैं। इसने अपनी पिता की हत्या कर दी थी। अत: इसे **पितृहन्ता** कहते हैं।
- ☛ यह अपने मामा प्रसेनजीत की पुत्री **वजीरा** से प्रेम करता था।
- ☛ इसने सुरक्षा की दृष्टि से राजगीर को किलाबंदी करा दी थी।
- ☛ राजगीर पांच पहाड़ियों से घिरा हुआ है।
- ☛ इसके समय सबसे बड़ी घटना **महात्मा बुद्ध** की मृत्यु थी।
- ☛ अजातशत्रु के काल में ही **सत्पर्णी गुफा** में राजगीर से **पहली बौद्ध संगीति** हुई। इसने अपने सहयोगी **वर्षकार** के सहयोग से वैशाली पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया।
- ☛ इस युद्ध में उसने दो नए हथियार **रथमूसल** तथा **महाशिला कंटक** का प्रयोग किया।
- ☛ यह जैन धर्म के पहले उपांग में **महावीर** और **अजातशत्रु** के रिश्ते के बारे में बताया है।
- ☛ यह प्रारंभ में जैन तथा बाद में बौद्ध धर्म को अपना लिया।
- ☛ इसने **16** वर्ष तक मगध पर शासन किया था।
- ☛ इसके दो पुत्र **उदयभद्र** तथा **उदायिन** था।
- ☛ इसके पुत्र **उदायिन** ने इसकी हत्या कर दी।

उदायिन (460-444 ई.पू.)

- ☛ इसने अपनी राजधानी **कुसुमपुर (पुरुषपुर)** बनाया था। यही कुसुमपुर (पुरुषपुर) आगे चलकर **पाटलीपुत्र** कहलाया था।
- ☛ इनकी माता का नाम **पद्मावती** था।
- ☛ इसने अपने पिता की हत्या की थी। इसलिए बौद्ध धर्म में इसे **पितृहन्ता** कहते हैं।
- ☛ इसका अन्य नाम **उदायी** या **उदयभद्र** था। यह चंपा का उप राजा था।
- ☛ पुराणों एवं जैन ग्रंथों में के अनुसार उदायिन ने गंगा एवं सोन के संगम के समीप एक शहर की स्थापना की, जिसका नाम **पाटलीपुत्र** रखा। इसके पुत्र ने पाटलीपुत्र को **पटना** रख दिया।
- ☛ इसने अपने राजधानी में **जैन चैत्य** का निर्माण करवाया था।
- ☛ इसकी हत्या किसी अनजान व्यक्ति द्वारा **चाकू से गोदकर** कर दी।
- ☛ उदायिन का पुत्र **नागदशक** एक **आयोग्य शासक** था। इसकी हत्या इसी के सेनापति **शिशुनाग** ने कर दी और एक **नया वंश शिशुनांग वंश** की स्थापना किया।
- ☛ महाभारत में यह जानकारी मिलती है कि मगध पर सबसे पहले **वृहद्रथ वंश** का शासन था। जिसके संस्थापक **वृहद्रथ** थे।
- ☛ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक **जरासंध** था। इसकी राजधानी गृहव्रज थी। जरासंध ने अपनी साम्राज्य विस्तार का पूरे उत्तर भारत में करना चाहते थे। पर **पाण्डव** और **कृष्ण** के विरोध में उसे अपने उद्देश्य में सफल नहीं होने दिया।

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

- ☞ भीम के हाथों **मल्ल युद्ध** में **जरासंध** मारा गया। जरासंध का पुत्र उसके बाद मगध का शासक बना।
- ☞ रिपुंजय वृहद्रथ वंश का अंतिम शासक था। उसकी हत्या उसके मंत्री **पुलीक** ने कर अपने पुत्र को शासक बनाया।
- ☞ घाटिया नामक सामंत ने कुलीक के पुत्र की हत्या कर अपने पुत्र बिम्बिसार को **मगध की गद्दी** पर बैठा दिया।
- ☞ किन्तु इस वंश के बारे में ऐतिहासिक **साक्ष्य** बहुत ही कम है। अतः **हर्यक वंश** को ही पहला **ऐतिहासिक वंश** मानते हैं।

शिशुनाग वंश (412-344 ई.पू.)

शिशुनाग (412-394 ई.पू.)

- ☞ इस वंश के संस्थापक **शिशुनाग** थे।
- ☞ इन्होंने **अवंती तथा वत्सराज** पर अधिकार कर उसे मगध साम्राज्य में मिलाया।
- ☞ इन्होंने अपनी राजधानी पाटलीग्राम से हटाकर **वैशाली** को बनाया।
- ☞ इसके शासन के समय मगध साम्राज्य के अंतर्गत **बंगाल** से लेकर **मालवा** तक का क्षेत्र था।
- ☞ इस वंश का अगला शासक **कालाशोक** था।

कालाशोक (394-366 ई.पू.)

- ☞ शिशुनाग के मृत्यु के पश्चात् **कालाशोक** मगध की गद्दी पर बैठा।
- ☞ इसका नाम पुराण तथा दिव्यावदान में **काक वर्ण** मिलता है।
- ☞ इसने वैशाली के स्थान पर **पाटलीपुत्र** को पुनः अपना राजधानी बनाया।
- ☞ इस समय द्वितीय **बौद्ध संगीति** वैशाली में हुई।
- ☞ यह **ब्राह्मण वंश** का प्रथम संस्थापक माना जाता था।
- ☞ पुराण के अनुसार यह **क्षत्रीय** था।
- ☞ इस वंश का अंतिम शासक **नंदीवर्मन** था, जिसकी हत्या **महापद्म नंद** ने कर दी और **शिशुनाग** के स्थान पर **नंद वंश** की स्थापना किया।

नंद वंश (344-323 ई.पू.)

- ☞ इस वंश का सर्वाधिक महाशक्तिशाली संस्थापक **महापद्म नंद** थे। जो जाति के शूद्र थे। इन्होंने राजपूतों का विनाश करके **सर्वक्षत्रांतक (क्षत्रीयों का नाश करने वाला)** की उपाधि धारण कर ली।
- ☞ इस वंश की जाति नाई (नापिथ) थी।
- ☞ राजानंद के प्रधानमंत्री का नाम राक्षस था।
- ☞ राक्षस का असली नाम विष्णुगप्त था।
- ☞ इस वंश का प्रथम शासक महापद्म नंद था।
- ☞ केंद्रीय शासन पद्धति का जनक या पिता महापद्म नंद को माना जाता है।
- ☞ इस वंश के धन-दौलत के बारे में वर्णन चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा की गई थी।
- ☞ व्याकरण के आचार्य पाणिनी महापद्म नंद के परम् मित्र थे।
- ☞ इस वंश के शासनकाल में उपवर्ष, वर्ष, रूचि, वर, कात्यायन जैसे विद्वान जन्म लिया था।
- ☞ इसी वंश के शासक ने एकराष्ट्र की विचार-धारा दिया था।
- ☞ इस वंश की राजधानी पाटलिपुत्र थी।
- ☞ इस वंश का द्वितीय शासक पण्डुक था।
- ☞ महापद्म नंद को **भार्गव (दूसरा परशूराम का अवतार)** भी कहा जाता था।
- ☞ इस वंश के समय मगध राजनैतिक दृष्टि से अत्यंत शक्तिशाली साम्राज्य बन गया।
- ☞ सम्राट महापद्म नंद पहले शासक थे। जिन्होंने गंगा घाटी की सीमाओं का अतिक्रमण कर विंध्य पर्वत के दक्षिण तक विजय पताका लहराई थी।
- ☞ इसने कलिंग जीतकर **एकराट** तथा **एकक्षत्र** की उपाधि हासिल की।
- ☞ यह कलिंग जितकर पूरी तरह मगध में नहीं मिला पाया।
- ☞ इस वंश का अगला शासक **घनानंद** था। यह बहुत ही क्रूर शासक था। इसने कलिंग में नहर निर्माण का कार्य किया था।
- ☞ इस वंश का सबसे लालची एवं धनसंग्रही शासक में घनानंद को गिना जाता था।
- ☞ जब सिकंदर भारत पर आक्रमण किया उस समय नंद वंश का अंतिम शासक घनानंद था।
- ☞ विश्व विजेता के सिकंदर ने भारत पर आक्रमण के समय सम्राट घनानंद की विशालतम सेना देखकर के हौसला पस्त हो गया। इतनी विशालतम शक्ति के सामने सिकंदर जैसे महान विश्व विजेता भी नत्मस्तक होकर वापस लौटने में ही अपनी भलाई समझी।
- ☞ सिकंदर के भारत से जाने के बाद मगध साम्राज्य में अव्यवस्था और अशांति फैल गई। प्रजा घनानंद के अत्याचार से ग्रस्त थे। पूरे राज्य में अराजकता फैली हुई थी।
- ☞ इसने अपने दरबार से चाणक्य को अपमान करके निकाल दिया, जिस कारण चाणक्य अपने प्रिय शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य के सहयोग से मगध में फैली अराजक और विस्फोटक स्थिति का लाभ उठाकर घनानंद की हत्या कर दी और मौर्य वंश की स्थापना कर दी।

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

मौर्य वंश की स्थापना से पूर्व भारत पर विदेशी आक्रमण (फारसी आक्रमण)

- भारत के पूर्वी क्षेत्र में मगध एक शक्तिशाली राज्य था।
- ये अगल-बगल के छोटे राजाओं को हराकर भारत के पूर्वी क्षेत्र में राजनीतिक स्थिरता ला दी थी। किन्तु भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र (पंजाब) में छोटे-छोटे राजाओं का शासक था, जो कमजोर शासक थे। जिस कारण विदेशी आक्रमणकारी पश्चिमोत्तर क्षेत्र पर ही आक्रमण किया।
- भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान (फारस) के हखमनी वंश के राजा ने किया। हखमनी वंश के संस्थापक साइरस-II थे।
- इस वंश का शासक डेरियस-I (दायबर) ने भारत पर आक्रमण करने वाला पहला विदेशी राजा था। इसने गांधार तथा कम्बोज को हरा दिया।
- इसने भारत में फारसी शासन का विस्तार किया।
- डेरियस प्रथम के बाद फारस का शासन जेरेक्स प्रथम बना।
- जेरेक्स प्रथम के बाद डेरियस–III फारस का शासक बना।
- इस वंश के अंतिम शासक डेरियस-III को सिकंदर ने पराजित कर दिया और हखमनि वंश का अंत कर दिया और फारस पर अपना राज्य स्थापित कर दिया।

मकदूनिया/यूनानी आक्रमण

- ईरान आक्रमण के बाद भारत पर दूसरा महत्वपूर्ण आक्रमण यूनानियों का हुआ।
- फारसी शासक (ईरान) डेरियस तृतीय को सिकन्दर ने युद्ध में मार दिया और फारस देश पर अपना अधिकार कर लिया था।
- यूनान के राजा फिलिप द्वितीय का पुत्र सिकन्दर था।
- इनके माता का नाम ओलम्पिया था।
- यह अपने पति को जहर देकर हत्या कर कर दी थी।
- सिकन्दर का मूल नाम एलेक्जेंडर मेसेडोनियन था।
- इसका जन्म मेसिडोनिया (पेला में) 356 ई.पू. में हुआ।
- इसकी पत्नी रूखसाना/रेक्सोना थी। रूखसाना के पिता फारसी शासक शाहदारा थे।
- इसके घोड़े का नाम बुफेकराल/ब्यूसेफेलरू/बऊकेफला था।
- इसके गुरू का नाम अरस्तु था।
- अरस्तु के गुरू प्लेटो थे, जिनको अफलातून कहा जाता था।
- प्लेटों के गुरू सुकरात थे, जिन्हें जहर का प्याला देकर मार दिया गया।
- भारत में सिकन्दर का सबसे पहला सामना तक्षशिला के राजकुमार आम्भिक से हुआ था। वहाँ के राजा आम्भिक ने सिकन्दर की अधीनता स्वीकार ली। गांधार की राजधानी तक्षशिला थी।
- 328 ई.पू. में सिकन्दर ने ईरान और अफगानिस्तान पर विजय प्राप्त किया।
- पंजाब के राजा (पुरु)पोरस और सिकन्दर के बीच झेलम नदी के तट पर युद्ध हुआ था।
- इस युद्ध में पोरस हार गए, किन्तु पोरस की वीरता को देखकर सिकन्दर ने उन्हें मित्र बना लिया, और सिकन्दर की पत्नी रेक्सोना ने पोरस की कलाई पर राखी बांधी।
- 326 ई.पू. में हुए इस युद्ध को झेलम, वितस्ता या हाइडेस्पीज का युद्ध कहते हैं।
- सिकन्दर स्थल मार्ग से 325 ई० में वह अपनी सेना के साथ भारत से लौट गया था।
- 323 ई.पू. में ईराक के बेबिलोन में (डायरिया) होने के कारण सिकन्दर की 33 वर्ष की अवस्था में मृत्यु हो गई।
- बेबीलोन का झूलता हुआ बगीचा 7 अजूबों में एक है।
- सिकन्दर भारत से कुशल बढ़ई प्राप्त करना चाहता था।
- सिकन्दर भारत में 19 महीने तक रहा था।
- सिकन्दर के साथ भारत आनेवाला लेखक निर्याकस, आने सिक्रेटस, ऑस्टिबुलस थे।
- सिकन्दर हिन्दुकुश पर्वत (खैबर दर्रा) को पार करके भारत आया था।
- सिकन्दर की सेना को व्यास नदी (हाईफेनिया) पार करने से मना कर दिया।
- सिकन्दर अपनी सेना को नदी पार करने के लिए बहुत प्रेरित किया, लेकिन उसकी सेना ने व्यास नदी के रौद्र रूप को देख भारत में युद्ध के लिए आगे से बढ़ने से इनकार कर दिया। अतः स्थल मार्ग से 325 ई० पू० सिकन्दर अपनी सेना के साथ भारत से लौट गया।
- सिकन्दर का थल सेना के सेनापति सेल्युकस निकेटर था। जबकि जल सेना का सेनापति निर्याकस था।
- सिकन्दर तथा उसके घोड़े बुफेकराल था। जिसके नाम पर उसने झेलम नदी के तट पर एक नगर भी बसाया था। सिकन्दर का मकबरा बेबीलोन में है।
- सिकन्दर का पुत्र सिकंदर चतुर्थ था जो पत्नी रूखसाना का पुत्र था।
- सिकन्दर लड़ाई में खुद सेना से आगे होकर लड़ने लगता था जिससे सेना का मनोबल और बढ़ जाता था।
- सिकन्दर को विश्व विजेता इसलिए कहा जाता है कि उस समय यूनान के लोगों को विश्व की जितनी जानकारी थी उन सभी क्षेत्रों को जीत लिया था।
- सिकन्दर पूरी दुनिया के 60% भाग को जीत लिया था।
- सिकन्दर ने एशिया माईनर (तुर्की), सीरिया, मिश्र, इराक, इरान, सिन्ध, गंधार, कंबोज जीत लिया था।
- सिकन्दर को पूरी दुनिया जीतने का सपना उसके गुरू अरस्तु ने दिखाया था।

One liner Question :–

★ मगध की राजधानी थी – **गिरिव्रज**

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

★ हर्यक वंश का संस्थापक था - **बिम्बिसार**

★ बिम्बिसार मगध की गद्दी पर बैठा - **544 ईसा पूर्व**

★ बिम्बिसार ने अपनी राजधानी बनायीं - **राजगृह**

★ बिम्बिसार ने मगध पर शासन किया - **लगभग 52 वर्षों तक**

★ भारतीय इतिहास में नियमित एवं स्थायी सेना रखने वाला पहला ज्ञात शासक कौन था - **बिम्बिसार**

★ महाजनपद युग में मगध सबसे आक्रमक महाजनपद के रूप में उभरा, मगध के साम्राज्य विस्तार का पहला शिकार कौन-सा महाजनपद हुआ - **अंग**

★ बिम्बिसार ने वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये - **कौशल नरेश प्रसेनजीत की बहन महाकोशल से, वैशाली के चेटक की पुत्री चेल्लाना से, मद्र देश की राजकुमारी क्षेमा से**

★ कौन-सा वंश भारतीय इतिहास में पितृहंता वंश के रूप में जाना जाता है - **हर्यक वंश**

★ मगध पर शासन करने वाला गैर क्षत्रिय वंश कौन सा था - **शिशुनाग वंश**

★ महाजनपदों में से किस महाजनपद की राजधानी का नाम गिरिव्रज था - **मगध**

★ मगध की राजधानी राजगृह से पाटलिपुत्र किस शासक के द्वारा स्थानान्तरित कर दी - **अजातशत्रु**

★ अजातशत्रु का उपनाम था - **कुणिक**

★ 461 ईसा पूर्व में अपने पिता की हत्या कर मगध की गद्दी पर बैठा - **उदयिन**

★ पाटलिग्राम की स्थापना की - **उदयिन ने**

★ उदयिन किस धर्म का अनुयायी था - **जैन धर्म का**

★ हर्यक वंश का अंतिम राजा था - **उदयिन का पुत्र नागदशक**

★ नागदशक को अपदस्थ करके उसके अमात्य ने 412 ईसा पूर्व को मगध पर किस वंश की स्थापना की - **शिशुनाग वंश की**

★ शिशुनाग ने अपनी राजधानी पाटलीपुत्र से स्थापित की - **वैशाली में**

★ शिशुनाग का उत्तराधिकारी था - **कालाशोक**

★ शिशुनाग वंश का अंतिम राजा था - **नन्दिवर्मन**

★ नन्द वंश का संस्थापक - **महापदम् नंद**

★ नन्द वंश का अंतिम शासक था - **घनानंद**

★ घनानंद समकालीन था - **सिकंदर का**

★ मेगास्थनीज चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में कितने वर्ष रहा था - **6 वर्ष**

★ बिन्दुसार के लिये यूनानी स्रोतों में कौन-सा नाम आया है -**अमित्रोकेट्स**

★ मगध-साम्राज्य का अंतिम विस्तार कलिंग विजय के रूप में था। इसकी शुरुआत किस विजय से हुई थी - **अंग विजय**

★ युद्ध-भूमि में बड़ी संख्या में सैनिकों के मारे जाने अथवा आहत हो जाने के बाद भारतीय गण अथवा राज्य की स्त्रियों ने सिकंदर के विरुद्ध शस्त्र धारण किया था? **–मस्सग**

★ मगध का कौन-राजा सिकंदर महाने के समकालीन थी? **–घनानंद**

★ सिकंदर के हमले के समय उत्तर भारत पर राजवंशों में से किस एक का शासन था **–नंद**

★ उस वीर भारतीय राजा का नाम बताइए जिसे सिकंदर ने झेलम नदी के तट पर पराजित किया था **–पुरु (पोरस)**

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

मौर्य वंश

- मौर्य वंश के बारे में जानकारी के कई स्त्रोत हैं-
  - **(i) पुरातात्विक स्त्रोत :** जूनागढ़ अभिलेख, साहगौर अभिलेख, अशोक के अभिलेख, भवन स्तूप एवं गुफा, मुद्रा (आहत/पंचमार्क), मृदभांड (काली पॉलिस वाले)।
  - **(ii) विदेशी यात्री का विवरण :** इण्डिका (मेगास्थनीज), आस्टिन और जस्टिन।
  - **(iii) साहित्यिक स्त्रोत :** पुराण, अर्थशास्त्र, राजतरंगिणी, मुद्रा-राक्षस (विशाखदत्त), जैन तथा बौद्ध ग्रन्थ, कथा सरिता सागर, वृहत्तकथा मंजरी (जैन ग्रंथ), कल्पसूत्र।

चन्द्रगुप्त मौर्य (322 - 298 ई.पू.)

- प्राचीन भारत का राजवंश जिसने 137 वर्ष तक भारत में राज्य किया। इसके स्थापना का श्रेय चंद्रगुप्त मौर्य और उसके प्रधानमंत्री चाणक्य (कौटिल्य) को दिया जाता है। जिन्होंने नंद वंश के राजा घनानंद को पराजित किया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरू और प्रधानमंत्री चाणक्य थे।
- इन्होंने अपना राजधानी पाटलीपुत्र को बनाया।
- 322 ई.पू. में चन्द्रगुप्त गद्दी पर बैठा।
- इनकी माता का नाम मोरा था। जिसका संस्कृत में अर्थ मौर्य होता है इसलिए इस वंश का नाम मौर्य वंश पड़ा।
- इनकी शिक्षा तक्षशिला में हुई थी।
- मौर्यकाल में शिक्षा का सबसे प्रसिद्ध केन्द्र तक्षशिला था।
- विशाखदत्त ने चंद्रगुप्त मौर्य के लिए बृषल (निम्न जाति) शब्द का प्रयोग किया।
- विशाखदत्त की पुस्तक मुद्राराक्षस में नंद वंश के पतन तथा मौर्य वंश के उदय की चर्चा है।
- इनके अनुसार चाणक्य के सहयोग से चन्द्रगुप्त मौर्य ने घनानन्द का अंत कर लिया और घनानंद की पुत्री दुर्धरा से विवाह कर लिया।
- चंद्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य उत्तर में काश्मीर से लेकर दक्षिण में कर्नाटक (मैसूर) तक तथा उत्तर-पश्चिम में इरान (फारस) से लेकर पूरब में बंगाल तक फैला था।
- जब चन्द्रगुप्त मौर्य जब मगध का शासक था। तब यूनानी आक्रमणकारी सेलयुकस निकेटर ने (305 ई.पू. में) आक्रमण कर दिया, किन्तु चन्द्रगुप्त मौर्य ने उसे पराजित कर दिया और उसकी बेटी कॉर्नेलिया (हेलेना) से विवाह कर लिया और दहेज में एरिया (हेरात), आराकोसिया (कंधार), जेड्रोसिया (ब्लूचिस्तान) तथा पेरिपनिसडाई (काबुल) ले लिया।
- इस बात का उल्लेख एप्पियानस नामक यूनानी ही देता है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने भी सेल्युकस निकेटर को 500 हाथी उपहार में दिए थे।
- भारतीय इतिहास का प्रथम महान सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य को कहा जाता है।
- सेल्युकस निकेटर ने अपना एक राजदूत मेगास्थनीज को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा। यूनानी लेखक पाटलीपुत्र को पोलीब्रोथा कहते थे।
- मेगास्थनीज की पुस्तक इंडिका से मौर्य वंश की जानकारी मिलती है। इंडिका में लिखा है कि मौर्य काल में समाज 7 भागों में बंटा था–

  1. दर्शनिक, 2. अहिर, 3. सैनिक, 4. किसान, 5. निरीक्षक, 6. कारीगर तथा 7. सभासद।
- इनमें से सर्वाधिक संख्या किसानों की थी तथा भारतीयों को लिखने में रूची नहीं थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने बंगाल अभियान भी किया था, जिसकी जानकारी महास्थान अभिलेख से मिलती है।
- चंद्रगुप्त मौर्य के दक्षिण विजय के बारे में जानकारी तमिलग्रंथ 'अहनानूर' एवं 'मूरनानून' तथा अशोक के अभिलेख से मिलती है।
- गोरखपुर में स्थित साहगौर ताम्र अभिलेख से अकाल के दौरान चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा किए गए राहत कार्यों की चर्चा है।
- जैन ग्रंथ रजावली में उल्लेख मिलता है कि चंद्रगुप्त मौर्य अपने पुत्र बिदुसार को गद्दी सौप दिया था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य को जैन धर्म की शिक्षा भद्रबाहु के नेतृत्व से मिली थी। भद्रबाहु के साथ ही चन्द्रगुप्त मौर्य कर्नाटक के श्रवण बेलगोला में चला गया। जहाँ 298 ई.पू. संलेखना (संथारा) विधि से प्राण त्याग दिया।
- रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख (गिरनार) गुजरात से जानकारी मिलती है, कि चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यपाल पुष्यगुप्त ने सरकारी खर्च से गुजरात के सौराष्ट्र में सुदर्शन झील बनवायी थी।
- इस अभिलेख ने चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चिमी विस्तार की जानकारी मिलती है।
- मौर्य वंश के बारे में सर्वाधिक जानकारी चाणक्य की पुस्तक अर्थशास्त्र से मिलती है। जो एक राजनैतिक एवं प्रशासनिक पुस्तक है। इस पुस्तक के 15 अधिकरण (Lesson) है। इस पुस्तक में राजा के राजत्व सिद्धांत की चर्चा है, और कहा गया है कि एक मजबूत राजा को सप्रांग सिद्धांत पालन करना होगा।

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

- **शरीर के अंगों के समान राज्य के 7 अंग होते हैं। जो निम्नलिखित हैं–**
  - (i) राजा → स्वामी → शीर्ष (Head)
  - (ii) मंत्री → अमात्य → आँख (Eye)
  - (iii) जनपद → क्षेत्र और जनसंख्या → पैर (Leg)
  - (iv) दुर्ग → किला → बांह (Arm)
  - (v) कोष → धन → मुख (Mouth)
  - (vi) दंड/सेना → न्याय → मस्तिष्क (Brain)
  - (vii) मित्र → सहयोगी → कान (Ear)
- चाणक्य को विष्णुगुप्त या कौटिल्य भी कहते है। ये तक्षशिला के ब्राह्मण थे और तक्षशिला विश्वविद्यालय के आचार्य थे।
- महावंश टिका में उल्लेख मिलता है कि चाणक्य तक्षशिला के एक ब्राह्मण थे।
- चाणक्य को भारत का **मैक्यावेली** कहा जाता है।
- इसके पिता का नाम गुणी था।
- चाणक्य ने **अर्थशास्त्र** नामक ग्रंथ की रचना की है। इससे हमें मौर्य सम्राज्य के राजनितिक गतिविधि की जानकारी मिलती है।
- चाणक्य की बेइज्जती घनानन्द ने की थी। इसी के प्रतिशोध के लिए इन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य का सहारा लिया और घनानन्द का अंत कर दिया।
- लूटार्क ने चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए ऐटोंकोटस शब्द का प्रयोग किया है।
- जस्टिन ने भी चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए सेण्ड्रेकोटस शब्द का प्रयोग किया है।
- Willian Jones ने यह पहचान कराया कि सेण्ड्रेकोटस ही चन्द्रगुप्त मौर्य हैं।
- प्लूटार्क के अनुसार चंन्द्रगुप्त मौर्य ने 6 लाख की सेना लेकर चाणक्य की सहायता से संपूर्ण भारत पर रौंद डाला था।

बिन्दुसार (298-269 BC)

- यह चन्द्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी था।
- इसके राज्य का संचालक चाणक्य करते थे।
- इसके पिता का नाम चन्द्रगुप्त मौर्य था।
- इसकी माता दुरधरा थी।
- इसके पत्नी का नाम चारूमित्रा और शुभद्रांगी थी।
- इसके पुत्र का नाम सुशीम, अशोक और तिष्य था।
- इसके दरबार में सीरिया के नरेश एण्टियोकस ने अपना राजदूत डायमेक्स को भेजा।
- इसे मेगास्थनीज का उत्तराधिकारी माना जाता है।
- स्ट्रैबो के अनुसार बिन्दुसार ने सीरिया के नरेश से अंजीर मीठी शराब तथा दार्शनिक मांगा था।
- वहाँ के राजा एण्टिओकस प्रथम ने अंजीर तथा मीठी शराब दिया किन्तु दार्शनिक ने लेने से मना कर दिया क्योंकि सीरिया में दार्शनिक का व्यापार नहीं होता है।
- बिन्दुसार के दरबार में मिस्र के राजा फिलाडेल्फ ने अपना राजदूत डायनोसियास को भेजा।
- बिन्दुसार के समय तक्षशिला (कश्मीर) में दो बार विद्रोह हुए।
- उस समय तक्षशिला का राजकुमार बिन्दुसार का बड़ा बेटा सुशीम था, जो इस विद्रोह को दबाने में असफल रहा।
- बिन्दुसार ने अपने छोटे पुत्र अशोक, जो उस समय अवन्ति का राजपाल था, उसे विद्रोह दबाने के लिए तक्षशिला भेजा।
- अशोक ने क्रूरता पूर्वक विद्रोह को दबा दिया।
- बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय को मानने वाला था। जिसके स्थापना मोखलीपुत्र गोशाल ने किया था।
- बिन्दुसार को **अमित्रघात** एवं **शत्रुविनाशक** भी कहते हैं।
- वायु पुराण में इसे **भद्रसार** भी कहा गया है।
- जैन धर्म में इसे **सिंहसेन** कहा जाता था।
- यह अपने शासनकाल में कोई नया प्रदेश नहीं जीता था।
- भारतीय इतिहास में इसको **पिता का पुत्र** और **पुत्र का पिता** की उपमा से जाना जाता है।

सम्राट अशोक (269-232 BC)

- इसका जन्म 304 ई.पू. पाटलीपुत्र में हुआ।
- इसके पिता का नाम **बिन्दुसार** तथा माता का नाम **शुभद्रागी** था। जिसे **धर्मा** के नाम से जाना जाता था।
- बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार अशोक ने राजा बनने के लिए अपने **99 भाईयों** की हत्या करके एक कुआँ में डाल दी थी वह कुआँ आज भी पटना के अगमकुआँ नामक स्थान पर स्थित है।
- **269 ई.पू.** में अशोक ने अपना **राज्याभिषेक** कराया।
- राज्याभिषेक के **8वें** वर्ष अर्थात् **261 ई.पू.** में अशोक ने **कलिंग** पर आक्रमण किया तथा कलिंग के राजधानी **तोशली** पर अधिकार कर लिया।
- कलिंग आक्रमण की जानकारी खारवेल के **हाथीगुफा** अभिलेख से मिलती है।
- इस अभिलेख के अनुसार कलिंग आक्रमण के समय कलिंग का राजा **नंद राज** था।
- कलिंग में हुए **भीषण नरसंहार** को देखकर अशोक का **हृदय परिवर्तित** हो गया और अशोक ने युद्ध नीति का सदा के त्याग दिया और **भैरिघोष** के स्थान पर **धम्मघोष** की स्थापना किया।
- ऐसा माना जाता है कि अशोक ने **हाथियों** को प्राप्त करने के लिए **कलिंग** आक्रमण किया था।

KHAN SIR
मानचित्र विशेषज्ञ

- कलिंग आक्रमण के बाद अशोक ने **बौद्ध धर्म** अपना लिया।
- इसे बौद्ध धर्म अपनाने की प्रेरणा इसके **भतीजे निग्रोथ** से मिली जबकि **बौद्ध धर्म** की शिक्षा उपगुप्त ने दी थी।
- अशोक शुरूआत में **ब्राह्मण धर्म** मानता था। परंतु बाद में **बौद्ध धर्म** अपना लिया।
- अशोक का बौद्ध धर्म उसका **व्यक्तिगत धर्म** था। उसने कभी भी बौद्ध धर्म को राजकीय धर्म घोषित नहीं किया। किन्तु अशोक बौद्ध धर्म को संरक्षण देता था।
- अशोक ने **बौद्ध धर्म** के प्रचार के लिए अपने बेटे **महेन्द्र** एवं बेटी **संघमित्रा** को **श्रीलंका** भेजा।

अशोक द्वारा भेजे गए धर्मप्रचारक

धर्मप्रचारक	देश
महेन्द्र और संघमित्रा	श्रीलंका
महाधर्मरक्षित	महाराष्ट्र
सोना तथा उत्तरा	सुवर्ण भूमि
महारक्षित	यवण देश
महादेव	मैसूर
मज्झिम	हिमालयी क्षेत्र
मज्झान्तिक	काश्मीर एवं गंधार

- बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद अशोक ने अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष से ही धर्म यात्रा प्रारंभ की उसी यात्रा के क्रम इस प्रकार है– बोधगया, कुशीनगर, लुम्बनि नगर, कपिल वस्तु, शारनाथ, तथा श्रावस्ती।
- अशोक ने अपने शासन के दसवें वर्ष सर्वप्रथम बोध गया की यात्रा की। उसके बाद बीसवें वर्ष लुम्बनी नामक ग्राम गया और उसे कर मुक्त कर दिया तथा केवल 1/8 भाग ही कर लेने की घोषणा की।
- अशोक के काल में तीसरी बौद्ध संगीति 255 ई.पू. में पाटलीपुत्र में हुई थी। जिसका अध्यक्ष **मोगलीपुतिस** था।
- श्रीलंका के राजा ने सिंघली संप्रदाय को छोड़कर बौद्ध धर्म अपना लिया। अशोक धार्मिक रूप से सहिष्णु था अर्थात् वह किसी भी धर्म के साथ भेद-भाव नहीं करता था।
- अशोक के समय मुद्राएं सोने (स्वर्ण), चाँदी (कार्षापण) एवं ताँबें (काकणी) आदि के होते थे।
- **अशोक ने आजीवक संप्रदाय के लोगों को गया में स्थित बराबर की पहाड़ियों में 4 गुफा दान में दिया–**

  (i) सुदामा, (ii) कर्ण, (iii) चोपाड़, (iv) विश्व झोपड़ी
- आजीवकों के लिए नागार्जुन गुफा दशरथ द्वारा प्रदान किया गया था। इसका उत्तराधिकारी कुणाल था।
- अशोक की 5 पत्नियाँ (असंधिता, देवी, करूआती, पदमावती, नित्यारक्षक) थी, जिसमें अशोक पर सर्वाधिक प्रभाव **कारूवाकी** का था।
- **कारूवाकी** के कहने पर ही अशोक ने युद्ध त्याग दिया था।
- कल्हण के पुस्तक राजतंरगिनी से पता चलता है कि उसका अधिकार काश्मीर पर भी था। अशोक ने काश्मीर में झेलम नदी के तट पर श्रीनगर की स्थापना किया तथा नेपाल में ललीतपतनम्/देवपतनम् नामक नगर बसाया था।
- अशोक भारत का पहला ऐसा शासक था, जिसने अपने संदेशों को अभिलेख के माध्यम से जनता तक पहुंचाया।
- अशोक को अभिलेख लिखने की प्रेरणा ईराक के राजा डेरियस (दारा) या दायबाहु से मिली।
- **अशोक के अभिलेखों की भाषा प्रकृति थी, जिसे 4 लिपियों में लिखा गया था–**

  (i) ब्राह्मी लिपी : यह सर्वाधिक भारत में मिले हैं। इसे बाईं से दाईं ओर लिखा जाता था।

  (ii) खरोष्ठि लिपी : यह पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम में मिले हैं। इसे दाईं से बाईं ओर लिखा जाता था।

  (iii) अरमाइक लिपी : यह अफगानिस्तान से मिली हैं।

  (iv) ग्रीक लिपी : यह अफगानिस्तान के उत्तरी सीमा से मिली है।
- अशोक के शिलालेख को पहली बार टी. फेन्थैलर ने 1750 ई. में खोजा।
- अशोक के अभिलेख को पढ़ने और समझने की पहली सफलता 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप को मिली।
- अशोक ने अपने अधिकतर अभिलेखों में अपना नाम देवनाम प्रियदर्शी (देवताओं का पसंद) लिखा है।
- मध्य प्रदेश के गुर्जरा तथा कर्नाटक की मास्की, नेदर तथा उद्गेलान अभिलेखों में अशोक का स्पष्ट नाम अशोक लिखा हुआ है।
- भाब्रु अभिलेख में अशोक के लिए मगध सम्राट नाम का प्रयोग हुआ।
- असम से अशोक की कोई भी साक्ष्य नहीं मिला है। जिससे यह पता चलता है कि यह क्षेत्र अशोक के सम्राज्य से बाहर था।
- अशोक 84000 स्तूपों का निर्माण कराया था।
- **अशोक के शिलालेखों को 3 भागों में बांटा गया है–**

  (1) **शिलालेख–** इसे वृहदशिलालेख तथा लघुशिलालेख में विभाजित किया गया हैं।

  (2) **स्तंभलेख–** इसमें दीर्घ स्तम्भलेख एवं लघुस्तम्भलेख में विभाजीत किया गया है।

  (3) **गुहालेख–** ये गुफाओं में लिखे जाते थे।

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

अशोक के चतुर्दश शिलालेख

1. **प्रथम शिलालेख :** इसमें अहिंसा पर बल दिया गया है और पशुबली पर रोक लगाया गया है। सभी मनुष्य मेरे बच्चे है।
2. **द्वितीय शिलालेख :** इसमें पशु चिकित्सा की चर्चा है साथ ही दक्षिण भारतीय राज्य जैसे- चेर, पाण्ड, श्रीलंका, केरलपुत्र, सतीयपुत्र की चर्चा है, किन्तु चोल वंश की चर्चा नहीं है।
3. **तृतीय शिलालेख :** इसमें अशोक ने 3 अधिकार राजुक, युक्तक तथा प्रदेशक का चर्चा किया है। जो धम्म के प्रचार के लिए थे। अशोक ने इस शिलालेख में राजकीय अधिकारियों को आदेश जारी किया कि वे हर पांचवें वर्ष दौरे पर जाय। इसमें धर्म संबंधित कुछ नियम भी निर्देशित हैं।
4. **चतुर्थ शिलालेख :** इसमें भैरिघोष (युद्ध) के स्थान पर धम्मघोष (बौद्ध) के नीति का चर्चा है।
5. **5वाँ शिलालेख :** इसमें धम्म महामात्र नामक अधिकारी की चर्चा है, जो धार्मिक जीवन की देख-रेख करता है। इसमें समाज तथा वर्ण व्यवस्था उल्लेख है।
6. **6वाँ शिलालेख :** इसमें अशोक ने कहा है कि मेरा अधिकारी जनकल्याण के लिए जब चाहे मुझसे मिल सकते हैं। इसमें आत्म नियंत्रण संबंधित शिक्षा दी गई है।
7. **7वाँ शिलालेख :** इसमें अशोक ने विभिन्न धर्मों के आपसी समन्वय की बात कही है। यह सबसे बड़ा शिलालेख है। इसमें तीर्थ यात्रा की चर्चा है।
8. **8वाँ शिलालेख :** इसमें अशोक के धम्म यात्रा की चर्चा है, जो इसके राजाभिषेक से 8वें वर्ष से प्रारंभ होती है।
   राज्याभिषेक के 10वें वर्ष - गया
   राज्याभिषेक के 20वें वर्ष - लुम्बिनी।
9. **9वाँ शिलालेख :** इसमें अशोक ने छोटे-मोटे त्योहारों पर प्रतिबंध लगा दिया। इस शिलालेख में सच्ची शिष्टाचार और सच्ची भेंट का उल्लेख है।
10. **10वाँ शिलालेख :** इसमें धम्म के महत्व के बारे में चर्चा है। इसमें सम्राट अशोक ने आदेश जारी किया कि राजा तथा उच्च राज्य अधिकारी हमेशा ही प्रजा के हित के बारे में सोंचे।
11. **11वाँ शिलालेख :** अशोक ने कहा है, कि मेरे अधिकारी ब्राह्मणों को न सताएं।
12. **12वाँ शिलालेख :** इसमें स्त्रियों के स्थिति में सुधार के लिए स्त्रीमहामात्रा नामक अधिकारी की चर्चा है एवं हर प्रकार के विचारों के सम्मान की बात कही गयी है।
13. **13वाँ शिलालेख :** इसमें कलिंग युद्ध की चर्चा है तथा साथ ही सम्राट अशोक के हृदय परिवर्तन की बात भी वर्णित है। साथ ही पड़ोसी राजाओं के संबंध का भी उल्लेख है।
14. **14वाँ शिलालेख :** अशोक ने कहा है, कि मैंने ऊपर लिखे गए शिलालेख के अतिरिक्त बहुत से काम किए हैं, जो इसमें नहीं लिखे गए हैं। इसके लिए लिखने वाला जिम्मेदार है, मैं नहीं।

	शिलालेख	लिपि	स्थान
1.	शाहबाजगढ़ी	खरोष्ठी	पेशावर (पाकिस्तान)
2.	मनसेहरा	खरोष्ठी	हजारा जिला (पाकिस्तान)
3.	सासाराम	ब्राह्मी	रोहतास जिला (बिहार, भारत)
4.	धौली	ब्राह्मी	पुरी (उड़ीसा)
5.	येरागुड़ी	ब्राह्मी	चितल दुर्ग (मैसूर)
6.	पालिकगुण्डु	ब्राह्मी	आविमठ (कर्नाटक)
7.	वैराट (भाब्रू)	ब्राह्मी	जयपुर (राजस्थान)
8.	कलसी	ब्राह्मी	देहरादून (उत्तरांचल)
9.	गिरिनार	ब्राह्मी	जूनागढ़ के पास काठियावाड़ (गुजरात)
10.	धौली	ब्राह्मी	पुरी (उड़ीसा)
11.	सोपारा	ब्राह्मी	थाने के पास (महाराष्ट्र)
12.	जौगढ़	ब्राह्मी	गंजाम जिला (उड़ीसा)
13.	रूपनाथ	ब्राह्मी	जबलपुर (मध्य प्रदेश)
14.	एर्रागुडी	ब्राह्मी	कुर्नूल (आन्ध्र प्रदेश)

अशोक के स्तंभलेख (लघु अभिलेख)

- **भाब्रू अभिलेख :** राजस्थान के भाब्रू अभिलेख में अशोक ने खुद को मगध का सम्राट बताया है।
- भाब्रू अभिलेख में इसने बौद्ध धर्म के त्रिरत्न बुद्ध, धम्म और संघ की चर्चा है।
- **अशोक के 7 स्तंभलेख (लघु अभिलेख) मिले हैं–**
  - **(i) रूमनदेई अभिलेख :** यह अफगानिस्तान के कांधार से मिलता है। जो आरमाईक लिपी में है। यह सबसे छोटा अभिलेख है। यह एक मात्र अभिलेख है जिसमें अशोक ने प्रशासनिक चर्चा न करके आर्थिक क्रियाकलाप की चर्चा की है।
  - **(ii) कौशाम्बिक अभिलेख :** (UP) इसमें अशोक ने अपनी पत्नि कारूवाकी द्वारा दिए गए दान की चर्चा की है। अतः इसे रानी की अभिलेख कहते हैं। अकबर ने इसे इलाहाबाद स्थापित कर दिया। इसे रानी अभिलेख भी कहा जाता था।
  - **(iii) टोपरा अभिलेख (हरियाणा) :** फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली के तुगलकाबाद में स्थापित करा दिया।
  - **(iv) मेरठ अभिलेख (UP) :** पहले यह मेरठ में था। फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली के तुगलकाबाद में स्थापित कर दिया।
  - **(v) रामपूर्वा अभिलेख :** यह बिहार के चंपारण में है। इसकी खोज 1872 ई. में कारलायल ने की।
  - **(vi) लौरिया नंदन गढ़ :** यह बिहार के चंपारण में है।
  - **(vii) लौरिया अरेराज :** यह बिहार के चंपारण में है।
- **सर-ए-कुना अभिलेख :** यह अफगानिस्तान के कांधार से मिला है। जो ग्रीक तथा अरमाईक भाषा में है।
- कलिंग अभिलेख में अशोक ने कहा है, कि संसार के सभी मानव मेरी संतान (पुत्र) हैं। मैं एक माँ की भांति उसके सांसारिक तथा प्रलौकिक जीवन की कामना करता हूँ। अशोक ने कहा है, कि जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे को योगाधाम को देकर निश्चित हो जाती है। उसी प्रकार मैं भी समाज की देख-रेख के लिए राजूक को नियुक्त किया है।

- ☞ राजूक अच्छे व्यक्ति को पुरस्कृत कर सकते हैं और गलत व्यक्ति को दंडित कर सकते हैं।
- ☞ अशोक के गुहालेखों की संख्या 3 हैं। जो बिहार में गया के निकट बराबर की पहाड़ी की गुफा में स्थित है। यहां 3 गुफाएं हैं। इनमें स्थित गुहालेखों में आजीवकों को दिए गए दान का उल्लेख मिलता है।
- ☞ अशोक को अभिलेख लिखने के लिए पत्थर (उत्तरप्रदेश) के चुनार से मिले हैं।

अशोक की धम्म यात्रा

- ☞ अशोक ने लोगों को नैतिकता सिखाने के लिए जो नियम कानून की संहिता बनाई उसे ही धम्म कहते हैं। अशोक का धम्म स्वनियंत्रण पर आधारित था।
- ☞ अशोक की धम की परिभाषा राहुलोवादसुत्र से ली गई है। अपने आप को नियंत्रित करना धम नीति का मूल सिद्धांत है।
- ☞ अशोक ने अपने दूसरे एवं सातवें स्तम्भ लेखों में धम के गुणों (सत्यवादीता, पवित्रता, साधुता, मृदुता, दान, दया, कल्याण) को बताया है।
- ☞ अशोक ने कहा है कि व्यक्ति अपने माता-पिता की आज्ञा मानें। व्यक्ति ब्राह्मण तथा भिक्षुक का आदर करें।
- ☞ व्यक्ति-दास तथा सेवकों के प्रति उदार रहें।
- ☞ व्यक्ति को जिओ-और-जिने-दो का पालन करना चाहिए।

मौर्यकालीन आर्थिक व्यवस्था

- ☞ इस समय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि, पशुपालन तथा कारखाना था और शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र तक्षशिला था।
- ☞ सरकारी भूमि को सीता भूमि कहा जाता था।
- ☞ निजी भूमि को भाग कहा जाता था।
- ☞ बिना वर्षा के अच्छी खेती को आदेवमातृक कहा जाता था।
- ☞ इस समय भूमि का उत्पादन का 1/6 (कौटिल्य के अनुसार) या 1/4 (मेगास्थनीज के अनुसार) लिया जाता था।
- ☞ बिक्री कर मूल्य का 10वां भाग होता था।
- ☞ भूमि माप वाले कर को रज्जू कहा जाता था।
- ☞ धार्मिक कर को बलि कहा जाता था।
- ☞ चारागाह कर को विवीत कहा जाता था।
- ☞ अकाल के समय कोई कर नहीं लिया जाता था।

मौर्यकालीन मुद्राएँ

- ☞ मौर्यकाल के राजकीय मुद्रा **पण** थी। जो चांदी का सिक्का हुआ करता था।
- ☞ मुद्राओं का परीक्षण करने वाला अधिकारी को **रूद्ददर्शक** कहा जाता था।
- ☞ इस समय चांदी के मुद्रा को कार्षापण कहा जाता था।
- ☞ इस समय सोने के सिक्के को स्वर्ण एवं निष्क कहा जाता था।
- ☞ तांबे के सिक्के को इस समय माष्क या काकनी कहा जाता था।

मौर्यकालीन संगठन

(i) श्रेणी : यह शिल्पकारों का संगठन था।

(ii) निगम : यह व्यापारियों का संगठन था।

(iii) सार्थवाह : यह कारवां (काफिला) का संगठन था।

मौर्यकालीन सैन्य व्यवस्था

- ☞ मौर्य कालीन सैन्य व्यवस्था बहुत ही विशाल थी। इस समय स्थायी तथा अस्थायी दो प्रकार के सैनिक रहते थे।
- ☞ रूद्र क्षेत्र में सेना का नेतृत्व करने वाला अधिकारी नायक होता था।
- ☞ मौर्यकाल की सेना नन्दों से 3 गुनी थी।
- ☞ **कौटिल्य ने सेना को तीन श्रेणीयों में बांटा था–**
  1. पुश्तैनी सेना, 2. भाटक सेना, 3. नगरपालिका सेना।
- ☞ जस्टिन ने कहा है, कि मौर्य की सेना डाकुओं का एक गिरोह था।
- ☞ मेगास्थनीज के अनुसार सेना का रख-रखाव 6 समितियाँ जिसमें प्रत्येक में 5 सदस्य होते थे। उसके द्वारा किया जाता था।

प्रशासनिक व्यवस्था

- ☞ मौर्यकालीन प्रशासन एक केन्द्रीकृत शासन था। राजा को सलाह देने के लिए मंत्री परिषद् होते थे।
- ☞ उच्च अधिकारियों को तीर्थ या माहामात्रा कहा जाता था। इनकी संख्या 18 थी। जासूसों के लिए चर शब्द का प्रयोग हुआ था।

अर्थशास्त्र में उल्लेखित तीर्थ (शीर्षस्थ अधिकारी)

1.	अमात्य	प्रधानमंत्री
2.	पुरोहित	धर्म एवं दान विभाग का प्रधान
3.	सेनापति	सैन्य विभाग का प्रधान
4.	युवराज	राजपुत्र
5.	दौवारिक	राजदरबार/राजकीय द्वार-रक्षक
6.	अन्तर्वेदिक	अन्तःपुर का अध्यक्ष
7.	समाहर्ता	आय का संग्रहकर्ता
8.	सन्निधाता	राजकीय कोष का अध्यक्ष
9.	प्रशास्ता	कारगार का अध्यक्ष
10.	प्रदेष्ट्रि	कमिश्नर
11.	पौर	नगर का कोतवाल
12.	व्यावहारिक	प्रमुख न्यायाधीश
13.	नायक	नगर रक्षा का अध्यक्ष
14.	कर्मान्तिक	उद्योगों और कारखानों का अध्यक्ष
15.	मन्त्रिपरिषद्	अध्यक्ष
16.	दण्डपाल	सैन्य सामग्री एकत्रित करनेवाला
17.	दुर्गपाल	राजकीय दुर्ग रक्षक
18.	अंतपाल	सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक

- ☞ मुख्यमंत्री और पुरोहित की नियुक्ति के पहले इनके चरित्र को जांचा या परखा जाता था उसे ही उपधा परीक्षण कहा जाता था।

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

- अशोक के समय प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी। ग्रामों के मुखिया ग्रामिक कहलाते थे।
- प्रशासनिक अधिकारियों को अध्यक्ष कहा जाता था। इनकी संख्या 26 थी।
  - (i) **सिताध्यक्ष :** कृषि विभाग
  - (ii) **अकाराध्यक्ष :** खनन विभाग
  - (iii) **लक्ष्मणाध्यक्ष :** मुद्रा विभाग
  - (iv) **राक्षिन :** पुलिस विभाग
  - (v) **धर्मस्थली :** दिवानी न्यायालय (धन)
  - (vi) **कन्टक शौद्ध :** फौजदारी न्यायालय (अपराध)
  - (vii) **गुढ़ पुरुष :** गुप्तचर
  - (vii) **संस्था :** स्थाई गुप्तचर
  - (ix) **संचार :** चलायमान गुप्तचर
  - (x) **आंटविक :** जंगल का अधिकारी
  - (xi) **समाहारता :** Tax या कर
  - (xii) **शनिधाता :** कोषाध्यक्ष
- मेगास्थनिज के अनुसार नगर का प्रशासन 30 सदस्यों का एक मंडल चलाता था। यह मंडल 6 समितियों में विभक्त होता था। प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।

न्याय व्यवस्था

- मौर्य काल में सम्राट सर्वोच्च न्यायालय तथा अंतिम न्यायालय तथा न्यायधिश था। ग्राम सभा सबसे छोटा न्यायालय था। जहाँ वृद्ध जन अपने निर्णय लेते थे।
- सर्वोच्च न्यायालय राजधानी में स्थित होता था।
- मुख्य न्यायाधीश को धर्माधिकारी कहा जाता था।
- अर्थशास्त्र के अनुसार राज्य में दो प्रकार के न्यायालय होते थे।
  1. **धर्मस्थीय (दीवानी)–** इसके द्वारा दिवानी तथा विवाह संबंधित विवादो का निपटारा किया जाता था।
  2. **कंटक शोधन (फौजदारी)–** इसके द्वारा फौजदारी तथा मारपीट जैसे समस्याओं का निपटारा होता था।
- अशोक के काल में जनपदीय न्यायालय के न्यायाधीशों को राजूक कहा जाता था।
- **गुप्तचर व्यवस्था–** मौर्य काल में गुप्तचर से संबंधित महामात्यासर कहा जाता था।
- अर्थशास्त्र में गुप्चरों को गुढ़पुरुष तथा इसके प्रमुख अधिकारी के सर्पमहामात्य कहा जाता था।
- **संचार–** इसमें जो व्यक्ति जगह-जगह जागकर गुप्तचरी करता था।
- **संस्था–** एक जगह संगठीत होकर गुप्तचरी करना।
- गुप्चतर के अलावा शांति व्यवस्था बनाये रखने तथा अपराधों की रोकथाम के लिए पुलिस भी थी। जिसे अर्थशास्त्र में आरक्षिण कहा गया है।

मौर्यकालीन वास्तुकला

- मौर्यकाल में लकड़ी के भवन हुआ करते थे, जो वर्तमान पटना के कुम्हरार से मिले हैं। मौर्यकाल में पत्थर के कुशल कारीगर होते थे।
- अशोक ने मध्य प्रदेश में साँची का स्तूप बनवाया है। जो सबसे बड़ा स्तूप है।
- अशोक ने (UP) के सारनाथ में अशोक स्तंभ बनवाया। जिस पर 4 पत्थर के शेरों को एक ही जगह रखा। जो अहिंसा का सूचक हैं। यही भारत का राष्ट्रीय चिन्ह भी है।
- मौर्यकाल में पत्थर की बनी सबसे महत्वपूर्ण कलाकृति पटना के दीदारगंज से मिला यक्ष एवं याक्षिणी की मूर्ति है।
- अशोक के अभिलेख विभिन्न क्षेत्रों से मिले हैं, किन्तु पाटलिपुत्र से एक भी अभिलेख नहीं मिला है।
- **स्तूप की संरचना–** स्तूप एक अर्द्धवृत्ताकार संरचना जिसे अण्ड कहा जाता है। अण्ड के ऊपर एक छज्जे जैसे संरचना होती है। जिसे हर्मिका कहते हैं। हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे 'यष्टि' कहते हैं। यष्टि पर तीन छत्रियाँ लगी होती थी। उपरोक्त संरचना के चारों तरफ घुमने के लिए प्रदक्षिणापथ होता है। इस संपूर्ण संरचना के चारों ओर एक वेदिका होती थी जहाँ तोरणद्वार (प्रवेश द्वार) बनाया जाता था।
- **स्तूप के विभिन्न अंगों का अर्थ–**
  1. **तोरण द्वार–** स्तूपों के चारों ओर प्रवेश द्वार बने होते थे जो चारों दिशाओं में बुद्ध के संदेशों से फैलने का प्रतीक है।
  2. **वेदिका–** स्तूपों के चारों तरफ एक घेरा बनाया जाता था जिसे वेदिका/रेलिंग कहा जाता था। जो पत्थरों के विभिन्न स्तरों/पट्टिकाओं का बना होता था। यह पवित्र भूमि का प्रतीक है, जो पवित्र स्थल को सामान्य दुनिया से अलग करती है।
  3. **'अण्ड'–** 'शांति' का प्रतीक।
  4. **'हार्मिका'–** देवताओं के घर अथवा पवित्रता का प्रतीक है।
  5. **'छत्र'–** बुद्ध के विचारों/भिक्षाओं का प्रतीक है। जैसे– श्रद्धा, सम्मान एवं उदारता।

सामाजिक जीवन

- अशोक ने बौद्ध धर्म को अपना लिया किन्तु यह दूसरे धर्मों का भी आदर करता था। हिन्दु धर्म त्यागने के बाद भी अशोक ने अपने नाम में देवनाम प्रियदर्शी जोड़ा, जो संस्कृत भाषा का है।
- अशोक ने 11वें शिलालेख में आदेश दिया है, कि ब्राह्मणों को कोई नहीं सताए।
- अशोक ने आजीवक संप्रदाय के भक्तों को गया कि 4 गुफा दे दिया।
- अशोक ने पशुबली पर पूर्णत: प्रतिबंध लगा दिया। यज्ञ तथा कर्मकांड पर रोक लगा दिया जिस कारण ब्राह्मणों की आय में बहुत कमी आ गई।

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

- मौर्य काल में दास का प्रचलन था।
- इस समय स्त्रियों कि स्थिति अच्छी थी। स्त्रियाँ पुर्नविवाह कर सकती थी। इस समय जो विधवा स्वतंत्रत रूप से जीवन यापन करती थी उसे क्षन्द वासीनी कहा जाता था।
- स्वतंत्रत रूप से वेश्यावृत्ति करने वाली महिला रूपजीवा कहलाती थी। इनके कार्यों का देख-रेख गणिकाध्यक्ष करते थे।
- इस समय तलाक को मोक्ष कहा जाता था।
- इस वंश में प्रथम बार लोगों के जन्म एवं मृत्यु का पंजीयन किया गया था।
- इस काल का सर्वश्रेष्ठ नमूना स्तंभ है।
- इस काल में पाटलिपुत्र नगर को विश्व के नगरों की रानी कहा गया है।
- इस समय महल मुख्यत: लकड़ी का बना हुआ था।
- इस काल में एग्रोनोमाई सड़क निर्माण अधिकारी को कहा जाता था।
- परिष्टि पर्वन जैन ग्रंथ में चन्द्रगुप्त मौर्य के जैन धर्म अपनाने का वर्णन मिलता है।
- इस काल का राजकोषिय वर्ष आषाढ़ (जुलाई) में आरंभ होता था।

प्रशासनिक ढाँचा

- मौर्यकाल में सबसे बड़ा पद राजा का होता था, उसके नीचे युवराज होते थे।
- प्रांत का शासन प्रांतपति के पास था।
- विष (जिला), विषपति के नियंत्रण में रहता थां
- 10 गांवों का छोटा मालिक या गोप होता था। जो सबसे प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव हुआ करती थी। जो ग्रामीण (मुखिया) के नियंत्रण में रहती थी।
- इस समय न्यायाधीश को राजूक कहा जाता था।
- **मौर्यकाल में प्रांतों की संख्या 4 थी, लेकिन अशोक के समय 5 हो गई, जो निम्नलिखित हैं-**

अशोककालीन मौर्य साम्राज्य के 5 प्रांत			
	प्रांत/चक्र	**राजधानी**	**प्रमुख स्थल**
1.	कलिंग	तोसली (धौली)	कलिंग
2.	अवंति राष्ट्र	उज्जयिनी	मालवा, राजपूताना, गुजरात, काठियावाड़
3.	प्राशी (पूर्वी प्रांत)	पाटलिपुत्र	बिहार-बंगाल के और उत्तर प्रदेश के क्षेत्र
4.	उत्तरापथ	तक्षशिला	गांधार, कंबोज, पंजाब, कश्मीर और अफगानिस्तान
5.	दक्षिणापथ	सुवर्णगिरि	विन्ध्य के दक्षिण का क्षेत्र

- इसके समय प्रांतों को चक्र कहकर संबोधित किया जाता था।
- प्रांतों के प्रशासकों को कुमार या आर्यपुत्र अथवा राष्ट्रिक कहा जाता था।
- प्रांतों के विभाजन विषय में होता था। जो विषयपति के अधीन होता था।

Note : श्रीलंका का राजा अशोक के उपदेशों का पालन करते थे, किन्तु श्रीलंका अशोक के अधीन नहीं था।

अशोक के उत्तराधिकारी

- 232 ई.पू. (BC) पाटलीपुत्र में अशोक की मृत्यु हो गई।
- इसके बाद मगध की गद्‌दी पर अशोक का पुत्र कुणाल बैठा।
- अशोक के पौत्र दशरथ ने आठ वर्षों तक शासन किया। अशोक की भांति उन्होंने देवनामप्रिय की उपाधि धारण किया तथा आजीवक संप्रदाय के साधुओं के लिए गया जिले में नागार्जुन पहाड़ी पर 3 गुफाओं का निर्माण कराया।
- अशोक का कोई भी उत्तराधिकारी योग्य नहीं था। मौर्य वंश का अंतिम शासक वृहदथ था। जो एक कमजोर तथा अयोग्य शासक था।
- इसके शासन काल में कलिंग नरेश खारवेल ने कलिंग को मगध से स्वतंत्र कर लिया।
- वृहदथ का सेनापति पुष्यमित्र शुंग था जिसने सेना के निरिक्षण के दौरान वृहदथ की हत्या कर दी और मौर्य वंश के स्थान पर शुंग वंश की स्थापना कर दी।

मौर्य वंश के पतन के कारण

- अशोक का युद्ध नीति त्याग देना।
- अशोक का बौद्ध धर्म के प्रति अत्यधिक झुकाव होना।
- अशोक ने बौद्ध भिक्षुकों को इतना दान दिया कि आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया।
- पतन का सबसे बड़ा कारण अशोक के उतराधिकारी का आयोग्य होना था। साथ ही विभिन्न अधिकारी भ्रष्टाचार में लिप्त हो गए।

Note : मौर्यकाल में वर्ष की शुरूआत आषाढ़ (जुलाई) महीनें से होती थी।

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)